



विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा नामित शोध पत्रिका- संख्या : 48672

ईसुरी-23

(पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका)

वर्ष - 2020 ISSN : 0976-5778

प्रधान संपादक

चन्दा बेन

संपादक

राजेन्द्र यादव

(सचिव बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

आशुतोष कुमार मिश्र



प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

ईसुरी-23

वर्ष - 2020 अंक - 23 ISSN : 0976-5778

संरक्षक

प्रो. आर.पी. तिवारी

कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

कर्नल राकेश मोहन जोशी

कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.)

संस्थापक संपादक

प्रो. कान्तिकुमार जैन

परामर्शदाता

प्रो. बी.आई. गुरू

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

प्रधान संपादक

प्रो. चन्दा बेन

संपादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

(सचिव, बुन्देली पीठ)

प्रबंध संपादक

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

आवरण छाया : उमेश यादव (सैकड़ों वर्ष प्राचीन कल्प वृक्ष, ओरछा म.प्र.)

प्रकाशक

बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संपादक मण्डल

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

डॉ. हिमांशु कुमार

डॉ. अरविन्द कुमार

डॉ. अफरोज बेगम

डॉ. विवेकानन्द उपाध्याय

डॉ. मनीष कुमार

सत्यप्रकाश उपाध्याय

संतोष सोहगोरा

सतीष कुमार

विवेक विसारिया

प्रधान सम्पादक की कलम से...



‘ईसुरी’ पत्रिका का यह 23वाँ अंक है। यह अंक बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्यकारों के साहित्य और उनके रचनात्मक व्यक्तित्व पर केन्द्रित है। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे प्रोफेसर बलभद्र तिवारी ने बुन्देली के आधुनिक साहित्य और साहित्यकारों पर केन्द्रित आधुनिक बुन्देली साहित्य की पुस्तकें बुन्देली पीठ से संपादित की थी। उनके इस महत्वपूर्ण कार्य के बाद लम्बे समय से बुन्देलखण्ड एवं बुन्देली के आधुनिक साहित्य की परम्परा को फिर से पुनः संग्रहित करने का प्रयत्न किया गया है। इसमें अनेक लेखक ऐसे हैं जिन्होंने अपने रचनात्मक व्यक्तित्व का गंभीर विस्तार किया है। बुन्देली साहित्य की समकालीन अभिव्यक्ति में परम्परागत रूप से भिन्न बदलाव देखने को मिलता है। साथ ही बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति और लोक जीवन के साथ इतिहास की धरोहरों में भी परिवर्तन और नये दृष्टिकोण सामने आये हैं। संस्कृति और साहित्य के इन परिवर्तनों को इस अंक में संग्रहित करने की कोशिश की गयी है।

बुन्देली भाषा में निबन्ध के रूप में गद्य की गंभीरता को बुन्देली में जो अभिव्यक्ति मिली है उसे पद्मश्री कैलाश मड़वैया के ललित निबन्धों में बखूबी देखा जा सकता है। बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएँ पुस्तक में बुन्देली के वरिष्ठ लेखक हरिविष्णु अवस्थी ने बुन्देलखण्ड की संस्कृति के साथ यहाँ के जल स्रोतों का इतिहास नये रूप में प्रस्तुत किया है। महेश कटारे ‘सुगम’ की बुन्देली गजलों ने बुन्देली को नये अर्थ में राष्ट्रीय पहचान दी है। इस अंक में पं. लोकनाथ सिलाकारी, पं. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, शिवकुमार श्रीवास्तव, रमेशदत्त दुबे, डॉ. गंगाधर झा, भुवन भूषण देवलिया, डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे, प्रो. विवेकदत्त झा आदि की लेखकीय स्मृति के साथ बुन्देली के रसखान मायूस सागरी, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, गंगाप्रसाद गुप्त के रचनात्मक व्यक्तित्व को भी अभिव्यक्त किया गया है।

इस अंक के सभी लेखकों और हिन्दी विभाग के सभी शिक्षकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अंत में विश्वविद्यालय के मनीषी कुलपति प्रो. आर.पी. तिवारी जी के प्रति विशेष धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ, जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से ‘ईसुरी’ पत्रिका का नियमित प्रकाशन संभव हुआ है।

प्रो. चन्दा बेन

अध्यक्ष

हिन्दी विभाग, बुन्देली पीठ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (म.प्र.)

• संपादकीय

ईसुरी पत्रिका के अब तक प्रकाशित सभी बाईस अंकों में बुन्देली भाषा साहित्य संस्कृति और इतिहास की धरोहरों को संरक्षित विश्लेषित करने का प्रामाणिक कार्य किया गया है। सन् 1983 से प्रारम्भ हुई 'ईसुरी' पत्रिका के 37 वर्षों के सफर में यह 23वाँ अंक है। यह अंक बुन्देलखण्ड के आधुनिक साहित्य और साहित्यकारों के रचनात्मक व्यक्तित्व पर केन्द्रित है। ईसुरी के इस अंक के पूर्व हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे प्रोफेसर बलभद्र तिवारी ने बुन्देली के आधुनिक साहित्य और साहित्यकारों पर एकाग्र आधुनिक बुन्देली साहित्य की तीन पुस्तकें बुन्देली पीठ से संपादित प्रकाशित की थी। इन पुस्तकों में संग्रहित बुन्देली लोक साहित्य की परम्परा को अब लगभग तीन दशक से अधिक समय हो गया है। इस लम्बी अवधि में विकसित हुई बुन्देली साहित्य की आधुनिक अभिव्यक्ति ने बुन्देली साहित्य को जो विस्तार और अभिव्यक्ति के नए क्षितिज दिए हैं, उन्हें इस अंक में समाहित करने की हमारी कोशिश कहाँ तक सफल हुई यह तो आप विद्वजन तय करेंगे। एक बात यहाँ उल्लेखनीय है कि ईसुरी के प्रारम्भिक अंकों में जो लेखक अपने पूर्व के बुन्देली साहित्य पर लेख लिख रहे थे विगत तीन दशकों में उनमें से अनेक लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन से बुन्देली साहित्य को नई दिशा दी है, ईसुरी का यह अंक उन रचनाकारों पर केन्द्रित है, जिन्होंने अपने बुन्देली-हिन्दी के लेखन में बुन्देली लोक जीवन और बुंदेलखंड की लोक-संस्कृति के साथ बुंदेलखंड के प्राकृतिक ऐतिहासिक महत्त्व के

विषयों को तरजीह दी है। बुंदेलखंड के ऐतिहासिक सन्दर्भों के मान्य विश्लेषक अन्वेषक वरिष्ठ लेखक हरिविष्णु अवस्थी की अभी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'बुंदेलखंड की पारम्परिक जल संरचनाएं' से बुंदेलखंड के प्राचीन जल स्रोत और यहाँ के पर्यावरण को देखने समझने की नई दृष्टि मिली हैं। विख्यात पर्यावरणविद अनुपम मिश्र ने भी इस पुस्तक के प्रकाशन को लेकर लेखक को पत्र लिखकर इसको महत्त्व दिया था। बुन्देली भाषा में गद्य को संभव करने तथा बुन्देली को विचार की भाषा बनाने की तरफ ले जाने का कैलाश मड़बैया ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी पुस्तक 'बुन्देली के ललित निबंध' को इसका प्रस्थान माना जा सकता है। बुन्देली साहित्य सेवा के लिए कैलाश मड़बैया को वर्ष 2019 में भारत सरकार ने बुन्देली साहित्य के लिए प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया था।

आधुनिक बुन्देली गजल की राष्ट्रीय पहचान बन चुके महेश कटारे 'सुगम' ने बुन्देली लोक संस्कृति को, उसकी स्मृतियों, उसकी वस्तुओं को नई अभिव्यक्ति दी है। विस्मृति की कगार पर खड़ी बुन्देली भाषा को अपनी अभिव्यक्ति के सामाजिक राजनैतिक तेवर से पुनर्नवा कर दिया है। उन्हें साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा हिन्दी सहभाषा सम्मान भी प्रदान किया गया है। ईसुरी पत्रिका के 23वें अंक में बुन्देली के 'रसखान' मायूस सागरी कृत 'ब्रजरज' महाकाव्य, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल कृत 'बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोश', अम्बिका प्रसाद 'दिव्य' की काव्य साधना, डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त

‘बरसैया’ आदि बुंदेलखंड के साहित्यकारों के साहित्य का संक्षिप्त मूल्यांकन किया गया है।

‘ईसुरी’ पत्रिका के संस्थापक सम्पादक और हिन्दी संस्मरण साहित्य को अपने लेखन से समृद्ध करने वाले प्रोफेसर कान्तिकुमार जैन पर केन्द्रित आलेख के साथ बुन्देली पीठ के पहले शोध अध्येता तथा आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के सहयोगी रहे आलोचक, नाटककार पं. लोकनाथ सिलाकारी, रमेशदत्त दुबे, शिवकुमार श्रीवास्तव, प्रो. विवेकदत्त झा, पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे, डॉ. गंगाधर झा, भुवनभूषण देवलिया सहित सागर विश्वविद्यालय एवं बुंदेलखंड की लेखन परम्परा ईसुरी के इस अंक के केंद्र में है। मध्यभारत बुन्देलखण्ड के ख्यातिलब्ध स्वतंत्रता सेनानी कवि लेखक पं. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी के स्मरणीय साक्षात्कार के साथ

ओमप्रकाश रिछारिया की अप्रकाशित बुन्देली लघु कहानी ‘बरोटी’ को इस अंक में विशेष रूप से शामिल किया गया है।

‘ईसुरी’ पत्रिका के प्रकाशन में विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति प्रो. आर.पी. तिवारी जी के सतत् मार्गदर्शन और उनकी व्यक्तिगत रुचि से ईसुरी पत्रिका के प्रकाशन में नियमितता आई है। इसके लिए बुन्देली पीठ हिन्दी विभाग कुलपति जी के प्रति विशेष आभारी है, और अंत में इस अंक के सभी लेखकों के प्रति धन्यवाद !

डॉ. राजेन्द्र यादव

सम्पादक

सचिव बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

अनुक्रम

प्रधान संपादक की कलम से...
संपादकीय

- प्रो. चन्दा बेन	3
- डॉ. राजेन्द्र यादव	5

बुन्देलखण्ड : कृति केन्द्रित मूल्यांकन

1. बुन्देली का सांस्कृतिक नाट्य उत्कर्ष (संदर्भ लोकनाथ सिलाकारी का राजा हरदौल बुन्देला)	- प्रो. राजमति दिवाकर	9
2. बुन्देली का रामभक्ति काव्य (संदर्भ भगवानदीन मिश्र का राजेन्द्र विलास महाकाव्य)	- प्रो. सुरेश आचार्य	12
3. बुन्देलखण्ड के रससिक्त अध्येता (संदर्भ हरिविष्णु अवस्थी का बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनाएं)	- प्रो. चन्दा बेन	14
4. बुन्देलखण्ड की समृद्ध परंपरा : प्रबोध महाकाव्य (संदर्भ जगदीश कुमार कुशवाहा)	- प्रो. सरोज गुप्ता	18
5. बुन्देली भाषा का रसात्मक महाकाव्य (संदर्भ मायूस सागरी का ब्रजरज)	- प्रो. चन्दा बेन एवं सुधीर साहू	20
6. सद्यः सीरोत्कर्षण सुरभिः : बुन्देली के ललित निबंध (संदर्भ पद्मश्री कैलाश मड़बैया के निबन्ध)	- डॉ. आशुतोष	24
7. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्तिकोष (संदर्भ आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल)	- डॉ. अफरोज बेगम	32
8. बुन्देली लोक का काव्यात्मक उछाह : ईसुरी (संदर्भ दया दीक्षित का फाग लोक के ईसुरी)	- डॉ. सुजाता मिश्र	36
9. बुन्देली लोक संस्कृति का सृजनात्मक वैभव (संदर्भ मोतीलाल चौरसिया : बुन्देली लोकगीतों के सांस्कृतिक अध्ययन)	- रतिराम अहिरवार	40

बुन्देलखण्ड : कृतिकार केन्द्रित मूल्यांकन

10. सागर जिले का साहित्यिक वैभव	- वृन्दावन राय 'सरल'	45
11. अम्बिका प्रसाद दिव्य की काव्य-साधना	- प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	49
12. लोकजीवन के चित्तेरे कवि : अवधकिशोर जड़िया	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	59
13. जयन्ति ते सुकृतिनो	- टीकाराम त्रिपाठी	66

14. मीत मेरे, दो विदा, मैं जा रहा हूँ : कांतिकुमार जैन	- प्रो. नरेन्द्र सिंह	69
15. आलोचक, नाटककार : पं. लोकनाथ द्विवेदी 'सिलाकारी'	- राहुल सिलाकारी (पत्रकार)	73
16. रमेशदत्त दुबे : एक जीवन्त व्यक्तित्व	- महेशदत्त अग्निहोत्री	76
17. बुन्देली ग़ज़ल की राष्ट्रीय पहचान : महेश कटारे 'सुगम'	- प्रो. बहादुर सिंह परमार	78
18. साहित्य साधक : डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त बरसैया	- डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय	82
19. बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी	- डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर'	87
20. वृंदावन राय 'सरल' के काव्य में समाज दर्शन	- डॉ. अवधेश कुमार	92
21. संवेदनात्मक यथार्थ के चितरे : शिवकुमार श्रीवास्तव	- अभिषेक दांगी	98

बुन्देलखण्ड : इतिहास, कला एवं संस्कृति केन्द्रित मूल्यांकन

● इतिहास

22. अमर शहीद मधुकर शाह बुन्देला	- भुवनभूषण देवालिया	103
23. 1857 की क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की धरती	- डॉ. अरविन्द कुमार एवं डॉ. हिमांशु कुमार	107
24. इतिहास, जौहर और बुनकरों की चन्देरी	- डॉ. राजेन्द्र यादव	111

● कला

25. सागर का कला वैभव	- प्रो. विवेकदत्त झा	117
26. बुंदेलखण्ड एरण का मूर्तिशिल्प एवं प्राचीन लोकसंस्कृति	- प्रो. नागेश दुबे	123
27. नवागढ़ का प्राचीन एवं अर्वाचीन स्वरूप	- ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत एवं राजीव कुमार जैन	130

● संस्कृति

28. लोकनाट्य परम्परा और बुन्देली संस्कृति	- डॉ. गंगाधर झा	135
29. तुलसीदास के साहित्य में बुन्देली लोकजीवन	- पद्मश्री डॉ. लक्ष्मीनारायण दुबे	138
30. बुन्देलखण्ड की प्राचीन नदियाँ	- एस.के. पारिख	141
31. बुन्देली लोक गाथाओं का सांस्कृतिक स्वरूप	- डॉ. दुर्गेश दीक्षित	146
32. बुन्देलखण्ड का धार्मिक पर्यटन	- डॉ. गौरी खोटे	151

● परिशिष्ट

33. ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी : स्मरणीय साक्षात्कार	- प्रो. ऊषा भटनागर	156
34. बुन्देली लघुकहानी : 'बररौटी'	- ओमप्रकाश रिछारिया	159

बुन्देली के अद्वितीय संपादक एवं संकलनकर्ता : प्रो. बलभद्र तिवारी

डॉ. राजेन्द्र यादव एवं प्रदीप कुमार सौर*

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी द्वारा 1956 में हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश में बुन्देली पीठ की स्थापना हुई थी। बुन्देली पीठ में आचार्य वाजपेयी के निर्देशन में आपने आरम्भ से ही बुन्देली भाषा के साहित्य का संकलन कर संपादन करना प्रारम्भ किया। बुन्देली साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यही है कि बुन्देली की जो रचनाएँ परम्परागत रूप से बुन्देली लोक में मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और परिवर्तित होती आ रही थी उन रचनाओं के मूल रूप को बुन्देली पीठ के माध्यम से संरक्षित संपादित कर विद्वान मनीषियों द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रो. बलभद्र तिवारी हिन्दी विभाग के छात्र से विभागाध्यक्ष तक के सफर में एक बड़े शोधकर्ता के रूप में कार्यरत रहे। आचार्य वाजपेयी के साथ वर्षों उन्हें काम करने का जो अवसर मिला उससे उनमें एक लेखक, संपादक, आलोचक और साहित्यिक अन्वेषक के मूल्यवान व्यक्तित्व का उदय हुआ। आचार्य वाजपेयी के बाद हिन्दी-विभाग के विद्वान अध्यक्ष रहे भारतीय काव्यशास्त्र के मान्य आचार्य भगीरथ मिश्र का भी मार्गदर्शन और शास्त्रीयता के साथ आधुनिकता बलभद्र तिवारी को प्राप्त हुई थी, इन्हीं साहित्यिक संस्कारों की परणति उनके रचनात्मक एवं संवादकीय

व्यक्ति में साफ दिखाई देती है। बुन्देली पीठ के सचिव संपादक के रूप में बलभद्र तिवारी ने बुन्देली लोक में बिखरे बुन्देली के मूल्यवान साहित्य को संग्रह कर प्रमाणिक रूप में संपादित किया। आचार्य बलभद्र तिवारी द्वारा प्राचीन, मध्यकालीन लुप्त हो रहे बुन्देली साहित्य को अपनी साहित्यिक निष्ठा के चलते अथक परिश्रम कर संग्रहित कर संपादित किया। स्वामी अग्रदास जैसे भक्त कवि की अग्रदास ग्रंथावली का बुन्देली पीठ से संपादन प्रकाशन कर हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की भक्ति धाराओं में खासकर रामभक्ति शाखा में एक नयी सांख्य भक्ति को जोड़ा। उन्होंने बुन्देली भाषा के महत्वपूर्ण लोक कवियों जैसे- बक्शीहंसराज, लाल कवि, ईसुरी, जगनिक आदि पर महत्वपूर्ण शोध कार्य भी करवाए।

डॉ. बलभद्र तिवारी ने आधुनिक बुन्देली साहित्य की रचनाशीलता को निजी रुचि और बुन्देली पीठ के हेतु को नयी दिशा दी। उन्होंने सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के आधुनिक कवियों की रचनाओं एवं साहित्यिक जीवन परिचय को संग्रहित कर संपादित किया। आचार्य बलभद्र तिवारी के इस महत्वपूर्ण कार्य से बुन्देली लोक साहित्य के आधुनिक रचना संसार को

*हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

एक नया आधार और विश्वास मिला। बलभद्र तिवारी के द्वारा बुन्देली लोक साहित्य के प्राचीन मध्यकालीन एवं आधुनिक साहित्य को राष्ट्रीय स्तर पर एक नया आधार मिला। आधुनिक बुन्देली भाषा एवं अभिव्यक्ति को उन्होंने अपने कुशल संपादन में एकरूपता में ढाला। फूहड़ मनोरंजन की प्रतीक बन चुकी, आधुनिक बुन्देली भाषा की रचनात्मकता को एक गरिमामय रचनात्मक संग्रह के द्वारा आचार्य बलभद्र तिवारी ने अपने अथक साहित्यिक प्रयासों से बुन्देली भाषा को नयी और जरूरी दिशा दी। आज बुन्देली भाषा के फूहड़ मनोरंजनात्मक और उत्तेजनात्मक पक्ष और बुन्देली भाषा के रचनात्मक साहित्यिक पक्ष में जो स्पष्ट विभाजन रेखा बन चुकी है इसका श्रेय निर्विवाद रूप से बलभद्र तिवारी को जाता है क्योंकि उन्होंने बुन्देलीपीठ हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर से 'ईसुरी' पत्रिका के साथ बुन्देली साहित्य के रचनात्मक संसार को जो भाषाई साहित्यिक आकार और विस्तार दिया उसी से बुन्देली भाषा के साहित्य को हिन्दी के समान्तर एक नयी और जरूरी स्वीकारोक्ति प्राप्त हुई। आचार्य बलभद्र तिवारी द्वारा संग्रहित संपादित बुन्देली रचनाओं का समीक्षात्मक परिचय यहाँ उल्लेखनीय है।

संक्षिप्त जीवन परिचय -

डॉ. बलभद्र तिवारी जी का जन्म 17 सितम्बर 1935 को ग्राम बरखोड़ा महंत, तहसील एवं जिला सागर, मध्यप्रदेश में हुआ। आपकी शिक्षा एम.ए. सागर विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में पास की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा छात्रवृत्ति हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय से प्राप्त की सन् 1960 में पी-एच.डी. की उपाधि से आपको सम्मानित किया गया एवं सम्प्रति डी. लिट. कार्य में संलग्न रहे। सागर विश्वविद्यालय के 1992 से 1995 तक हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। बुन्देली पीठ की प्रसिद्ध 'ईसुरी' पत्रिका के सम्पादक एवं संचालक रहे। विद्यार्थी जीवन में छात्र संघ पत्रिका के सम्पादक रहे एवं एन.सी.सी. में सोलह वर्ष

तक अधिकारी रहे। आपने देश के अनेक नाटकों एवं सांस्कृतिक कार्यों में भाग लिया। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के जी के साथ आलोचना के सहकारी रहे। सन् 1953 से 1965 तक आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के निजी सचिव रहे। इन्हें सन् 1962 ई. में 'आधुनिक हिन्दी साहित्य की व्यक्तिवाही प्रवृत्तियाँ' पुस्तक पर मध्य प्रदेश शासन का 'रघुनाथ पुरस्कार' भी मिला है। प्रसिद्ध रचनाएँ - बुन्देली काव्य परम्परा (भाग-1, 2, 3) सनेह सागर, बुन्देली काव्य परम्परा-2 (आधुनिक काव्य), बुन्देली लोककाव्य (भाग-1, 2, 3), बख्शी हंसराज, स्वामी अग्रदास ग्रंथावली, बुन्देली का आधुनिक नाट्य साहित्य, बुन्देली का नया काव्य आदि हैं। इसके अलावा उपन्यास में प्रमुख रूप से कस्बे का नरक, अमर टाकीज, रूको द्वोपदी, छत्र विलास, आधीरात के मल्हार, ओ मृगशिर एवं एक और इन्द्रप्रस्थ प्रमुख है।

बुन्देली काव्य परम्परा -

बुन्देली काव्य परम्परा भाग-एक का प्रकाशन सन् 1971 में बुन्देली पीठ, सागर विश्वविद्यालय द्वारा किया है। बुन्देली काव्य परम्परा में कवियों के संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनकी रचनाओं का संग्रह एवं प्रकाशन किया है। इसका विवरण इस प्रकार है- (1) लोकगीत, वर्गीकरण, प्रकार विवेचन (2) बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (3) बुन्देलखण्ड, व्युत्पत्ति सीमाएँ एवं मानचित्र (4) बुन्देली का उद्भव और विकास (5) प्राचीन बुन्देलखण्ड तथा उसकी भाषा (6) बुन्देली एक मध्यदेशीय भाषा पश्चिमी हिन्दी की बोली, (7) बुन्देली व्याकरण (8) बुन्देली साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।

बुन्देलखण्ड के प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं के संग्रह और प्रकाशन में प्रमुख रूप से जगनिक- आल्हा खण्ड, विष्णुदास- अथ राम जन्म कथा, केशवदास-राम वंदना, गोरेलाल- छत्रप्रकाश (छत्रसाल को शिवाजी का उपदेश), पद्माकर- रामरसायन से ठाकुर,

बोधा, अग्रदास- कुण्डलिया, अक्षर अनन्य- रागकान्हरो, हरिसेवक मिश्र, मदनेश- लक्ष्मी बाई रासों, बख्शी हंसराज- सनेह सागर, बृजकवि (समर सागर से) लंकागढ़ विजय, बिहारीलाल- सुदामा चरित्र आदि हैं।

बुन्देली काव्य परम्परा भाग एक में यह जिक्र है कि बुन्देलखण्ड में फाग केवल हृदय के उद्गारों से ही तृप्ति नहीं; आनंद प्रदर्शन के लोकमंच पर नृत्य की सृष्टि भी होती है। यहीं वे फागें हैं, जिन्हें लोक नृत्य में सर्वोपरि समझा जाता है। बुन्देलखण्ड में फागें होली त्यौहार आने के समय सभी गाँव के व्यक्ति गाँव के देवी-देवीताओं के मन्दिर या किसी सामाजिक स्थान पर गाई जाती हैं। गाने वालों में दो पक्ष हो जाते हैं। फागें ग्रामीण जीवन की प्राचीन संस्कृति परम्परा को व्यक्त करती हैं। बुन्देलखण्ड में इनका सर्वाधिक महत्त्व है। यथा - “गगरी झलके पग घरे अरे, गोरी लफलफ जाय। वारों पे नजरें अरे, अंगिया में कुलाटें खाय। तुम्हारे शोखी पे आ रहे जोवने। कुड़ारी पे गागर घरी अरे, गागर पे घर लई सेज। कुवाँलों से गोरी निंग चली अरे, पर गई अटा की ओट।।”¹

बुन्देली काव्य परम्परा भाग दो -

आधुनिक काव्य का प्रकाशन सन् 1972 में बुन्देली पीठ द्वारा किया गया। डॉ. बलभद्र तिवारी द्वारा सम्पादन किया गया। वक्तव्य में डॉ. आत्मानंद मिश्र ने लिखा है कि इसमें तीन प्रकार के कवि हैं जिसमें एक वे जो ब्रजभाषा में लिखते हैं एवं बुन्देली शब्दों का प्रयोग करते हैं। दूसरे वे जो ठेठ बुन्देली में लिखते हैं और तीसरे वे जो इस बोली में छुट-पुट कविताओं को लिखते हैं। इस बुन्देली काव्य में बुन्देलखण्ड की वीरता और गौरव का गान है। साथ ही इसमें राष्ट्रीय भावना, बुन्देली, संस्कृति, कृषक जीवन का बड़ा मार्मिक वर्णन है। डॉ. बलभद्र तिवारी का बुन्देली काव्य परम्परा, “बुन्देली काव्य धारा का अत्याधुनिक युग हिन्दी की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से विशेष सम्बद्ध है।”²

बख्शी हंसराज -

बुन्देलखण्ड के सुप्रसिद्ध कवि बख्शी हंसराज कृत इनकी सनेह सागर प्रमुख कृति है। सनेह सागर को सम्पादित प्रकाशित करने का कार्य डॉ. बलभद्र तिवारी द्वारा सन् 1970 में किया गया। ‘सनेह सागर’ की भूमिका डॉ. भगीरथ मिश्र द्वारा लिखी गई। सनेह सागर में श्री कृष्ण एवं राधा के प्रेम का मार्मिक चित्रण किया गया है। सनेह सागर को बुन्देलीपीठ सागर विश्वविद्यालय सागर द्वारा प्रकाशित किया गया। इसमें कुल तेरह तरंग (अध्याय) हैं। डॉ. भगीरथ मिश्र एवं डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा सनेह सागर की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है। इसके प्रथम तरंग में वंदना और कवि परिचय का वर्णन, द्वितीय तरंग में- ललिता का गोकुल गमन एवं कृष्ण दर्शन, चतुर्थ तरंग- दधि बेचन, पंचम तरंग में- फाग लीला, षष्ठ तरंग में- अखती लीला, सप्तम तरंग में- वट पूजन लीला, अष्टम तरंग में- कृष्ण का सखी रूप, नवम तरंग- राधा का सखा भेष, दशम तरंग में- चुरेनिन लीला एवं एकादश तरंग में- चोवदार लीला आदि का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया गया है।

बुन्देली के आधुनिक कवि -

इस पुस्तक में बुन्देलखण्ड के आधुनिक कवियों के संक्षिप्त जीवन परिचय सहित उनकी महत्त्वपूर्ण आधुनिक कविताओं को प्रकाशित किया गया है। संग्रहित कवि और रचनाओं के शीर्षक इस प्रकार हैं- जानकी प्रसाद द्विवेदी- बुन्देली ‘भाषा काव्य एक सिंहावलोकन’, शिवसहाय चतुर्वेदी- ‘कवित्र पच्चीसी’, रामचन्द्र भार्गव- ‘नेता गिरी विचार’, हरिप्रसाद जी ‘हरि’- ‘सन् सत्तावन की प्रतिज्ञा’, श्री लोकनाथ द्विवेदी- ‘वीर हरदौल’, बृजेश- ‘वीर हरदौल’, रामचरण ध्यारण मित्र- ‘लोक गायनी’, पण्डित सुधाकर शुक्ल- ‘किरनदूत’, ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी- संतोष सिंह- ‘गयैयों’, अवधेश- ‘यही बुन्देल घरा’, बाबूलाल खरे- ‘मतारी’, माधव शुक्ल ‘मनोज’ - ‘माटी के बोल’, दुर्गेश दीक्षित- ‘बुन्देलखण्ड की धरती’, गुण सागर सत्यार्थो-

‘भुन्सारे’, लक्ष्मीचन्द गुप्ता- ‘कसमीरी चिरैया काय रोई’, नीरज जैन- ‘पत्नी की पाती’ एवं कोमचन्द कल्याण- ‘वालापन’ आदि। इन सभी को बुन्देली काव्य परम्परा में संग्रहीत एवं सुरक्षित किया गया।

बुन्देली का नया काव्य -

डॉ. बलभद्र तिवारी जी ने बुन्देली का नया काव्य को सन् 1983 में बुन्देली पीठ से प्रकाशित किया। जिसमें कवियों का जीवन परिचय एवं रचनाओं का संग्रह सुरक्षित किया गया। प्रमुख कवि भैयालाल व्यास, विध्यकोकिल- बुन्देली वसंत, शंभुदयाल ब्रजेश- बुन्देली वंदना, जीता बुन्देलखण्डी- राम आसरे, चतुरेश- गाँव की कुटियाँ, रतिभानु तिवारी कंज- गाँव की गोरी, रघुवीर प्रसाद श्रीवास्तव- मिटन न दैहें काश्मीर सो, लक्ष्मीनारायण पथिक- शारदा वंदना, भगवान सिंह गौड़, राम राजा की जय बुलावनें, महेश कुमार मिश्र- फागुन को मईना, शर्मन लाल सरस- बने गाँव के गामा, गोरेलाल साहू- आध्यात्मिक रचना, लोकेन्द्र सिंह नागर- अंधेरो, द्वारका प्रसाद अग्रवाल बैचेन- फागों, कैलाश मड़वैया- ले लेव कलेवा मैं ठाड़ी पिया, ओम प्रकाश सक्सेना प्रकाश- वासुदेव प्रसाद खरे एम.एल. से निवेदन, फूलचन्द मधुर- सव स्वारथ की बातें, अद्योद्ध्या प्रसाद चौबे आदि सम्मिलित है। बुन्देली के आधुनिक काव्य में जीवन की अभिव्यक्ति अनूठी है- “मुख से बोलो मीठी वाणी, सांची सीख पुरानी। खरच न होने घेला पाई, ना कउँ हाट विसानी। न कछु जा में कठिन तपस्या ना कछु तानातानी। करए बोल के जिया दुखावौ है भारी नादानी। हँसके बोल-बता लो ममुआँ रै जै जोई निसानी।।”³

अग्रदास ग्रन्थावली -

डॉ. बलभद्र तिवारी ने भक्तिकालीन कृति अग्रदास ग्रन्थावली का संपादन एवं प्रकाशन सन् 1985 में बुन्देली पीठ द्वारा किया गया। मध्ययुगीन साहित्य एवं संस्कृति की अपेक्षा : अग्रदास जी है। अग्रदास जी ने मध्ययुगीन रामकाव्य को एक नई दिशा देने वाले

प्रमुख संत कवि है। कुण्डलियाँ में बुन्देलखण्ड के प्रचलित कहावतों और मुहावरों के माध्यम से अग्रदास ने रामभक्ति को प्रधान और सांसारिक जीवन को गौण रूप में बताया। ध्यान मंजरी, साधन गीतावली आदि इसमें सम्मिलित है। डॉ. बलभद्र तिवारी ने अग्रदास के सम्बन्ध में कहा है कि “अग्रदास संस्कृत और भाषा के प्रकाण्ड पण्डित थे। भाषा से मेरा तात्पर्य मध्ययुग की उस प्रचलित भाषा से है, जिसे विद्यापति ने ‘देसिल बअना सब जन मिट्ठा’ कहा है और कबीर ने ‘का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए सांच’ कहा है अथवा जिसे केशव ने ‘भाषा बोलि न जानहीं जिनके कुल दास’ से सम्बोधित किया है।”⁴

बुन्देली लोककथाएँ -

बुन्देली लोक कथाएँ पुस्तक का प्रकाशन 1994 में डॉ. बलभद्र तिवारी जी ने बुन्देली पीठ के माध्यम से किया। बुन्देली लोककथाएँ नामक पुस्तक में मध्य भारत बुन्देलखण्ड की सोलह लोककथाओं को प्रस्तुत किया गया है। बुन्देलखण्ड में लोककथाएँ एक समृद्ध जीवन एवं संस्कृति की धरोहर हैं। बुन्देली लोककथाएँ की शिक्षाएँ पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत समाज के जीवन को दर्शाती हैं। साथ ही इसमें जनमानस को मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक आधार पर परिचालित करने की अद्भूत शक्ति है और मायूश एवं उदास व्यक्ति भी इनके श्रवण एवं पाठन से अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो जाता है। जैसे- मल्हार राग आदि।

बुन्देली लोककथाएँ पुस्तक में शिवसहाय चतुर्वेदी कृत पसीने की कमाई, काग-विड़ारिन, सवरंग दरवाजा, सोने की चिड़िया, बड़ई का कुँवर, वासुकी नाग की मुदरी, संत वसंत, बुद्धि बड़ी या पैसा, लाल की चोरी, भाग्य बलवान, मिश्री की प्रीति जनपाण्डे, नथनीवाला वीर, वैरी बैठे, रानी फूलवती एवं बलभद्र तिवारी कृत आधी रात के मल्हार है। डॉ. बलभद्र तिवारी ने इस पुस्तक की भूमिका में कहा है कि ‘बुन्देली लोककथाएँ’

नामक इस पुस्तक में मध्य भारत के एक महत्त्वपूर्ण भू-भाग बुन्देलखण्ड की सोलह लोककथाओं को प्रस्तुत किया गया है।¹

निष्कर्षतः डॉ. बलभद्र तिवारी ने अपने अथक प्रयास के माध्यम से बुन्देलखण्ड के विभिन्न लेखकों की बिखरी हुई सामग्री यथाचेत संग्रहण किया और प्रकाशन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। निश्चित रूप से डॉ. बलभद्र तिवारी सागर एवं बुन्देली के एक प्रतिभावान लोक साहित्य के अध्येता रहे हैं, जिन्होंने बुन्देली लोक संस्कृति, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक जनसामान्य की दृष्टि को एक नया रूप प्रदान किया है। उनका बुन्देली साहित्य के उत्थान में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है एवं बुन्देली भाषा साहित्य को आपने समृद्ध किया। लोकसाहित्य, लोकनाट्य, लोककथा, लोकगीत आदि को सहेजने और संवारने का कार्य अद्वितीय है। निश्चित रूप से बुन्देली भाषा के लोक साहित्य को डॉ. बलभद्र तिवारी ने राष्ट्रीय स्तर पर नई भाषाई पहचान दी। उन्होंने अपने साहित्यिक अध्यवसाय से बुन्देली को बोली से भाषा बनाये और माने जाने की श्रम-साध्य साधना की है। वे भगीरथ मिश्र और कांतिकुमार जैन की पीढ़ी के बुन्देली साहित्य के सबसे बड़े संग्राहक एवं सम्पादक रहे हैं। उनके द्वारा

संपादित-प्रकाशित बुन्देली साहित्य की अनेक पुस्तकें बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग की निधि हैं, जिनसे बुन्देली भाषा और साहित्य को नई दिशा मिली है।

सन्दर्भ -

1. बुन्देली काव्य परम्परा, बलभद्र तिवारी, प्रथम खण्ड प्राचीन काव्य, प्रकाशन- बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, प्रथम संस्करण : 1971, पृ. 14
2. बुन्देली काव्य परम्परा, द्वितीय खण्ड आधुनिक काव्य, बलभद्र तिवारी, प्रथम खण्ड प्राचीन काव्य, प्रकाशन- बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, प्रथम संस्करण : 1972, पृ. 03
3. बुन्देली का नया काव्य, डॉ. बलभद्र तिवारी, सत्येन्द्र प्रकाशन, 30, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-06, प्रथम संस्करण : 1983, पृ. 75
4. अग्रदास ग्रथावली, डॉ. बलभद्र तिवारी, सत्येन्द्र प्रकाशन, 30, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-06, प्रथम संस्करण : 1985, पृ. 05
5. बुन्देली लोकथाएं, डॉ. बलभद्र तिवारी, बुन्देली पीठ, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, संस्करण : 1994, लैप कवर से

